दक्षिण एशिया के सुकरात-पेरियार रामासामी नायकर

डॉ. राष्ट्रपाल गणवीर
महिला महाविद्यालय नागपुर

भारतीय समाज और व्यक्तियों का पूर्ण आधुनिकीकरण बुद्धिजीवियों के विचारों पर आधारित है, उनमें ई.वी. रामसामी भी शामिल हैं। रामासामी पेरियार अग्रणी हैं। पेरियार ने उन सभी मुद्दों की पहचान की और उन पर प्रकाश डाला जिनका उन्मूलन भारतीय समाज के आधुनिकीकरण की अनिवार्य शर्त है.. ई.वी. रामासामी नायकर 'पेरियार' भारत की प्रगतिशील श्रमण-बहुजन-परंपरा के लेखक हैं, जिन्होंने आर्य श्रेष्ठता और उत्तर भारत के द्विजों के मर्दवादी अहंकार पर जोर दिया। प्रभुत्व, अन्याय, किसी भी प्रकार की असमानता और दासता को उन्होंने स्वीकार नहीं किया| उनकी आवेगपूर्ण अभिव्यक्ति पाठकों को झकझोर देती है। 1970 मुझे उनके तर्क, दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति की शैली के लिए यूनेस्को द्वारा "दक्षिण एशिया का सुकरात" कहा गया था। पेरियार 1920 से 1925 तक कांग्रेस पार्टी में रहे। वह औपचारिक रूप से 1920 में कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए और 1920 और 1924 में तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेंसी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष और 1921 और 1922 में इसके सचिव रहे। इस अवधि के दौरान उन्होंने गांधी के एक मजबूत मित्र के रूप में काम किया लेकिन कांग्रेस और गांधी के साथ काम करते हुए उन्हें एहसास हुआ कि पार्टी और गांधी उत्तर भारतीय आर्य-द्विज लोगों के वर्चस्व को बनाए रखने के लिए एक उपकरण थे। उन्होंने कांग्रेस पार्टी में काम करने के अपने अनुभवों के बारे में लिखा. जब मैं तमिलनाडु कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष था, तब मैंने 1925 के सम्मेलन में एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। उस प्रस्ताव में मैंने जातिविहीन समाज बनाने का प्रस्ताव रखा| मेरे मित्र चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (राजाजी) ने इसे अस्वीकार कर दिया। मैंने अनुरोध किया था कि कांग्रेस के विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों में जाति प्रतिनिधित्व (वंचित और अल्पसंख्यक वर्गों के लिए आरक्षण) का पालन किया जाना चाहिए। लेकिन इस प्रस्ताव पर विषय समिति में भी चर्चा हुई| एन.एस. (एक प्रतिष्ठित तमिल विद्वान कल्याणसुंदरनार द्वारा अस्वीकृत)। फिर मुझसे अपने प्रस्ताव के समर्थन में 30 प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर लेने को कहा गया| श्रीमती रामनाथन को 50 प्रतिनिधियों से हस्ताक्षर मिले। फिर सभी श्री सी. राजगोपालाचारी, श्रीनिवास अयंगर, सत्यमूर्ति और अन्य ने अपना विरोध दर्ज कराया। उन्हें डर था कि यदि मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया तो कांग्रेस समाप्त हो जायेगी। बाद में यह प्रस्ताव थिरु वी. एन.एस. और डॉ. पी. वर्दराजुलु द्वारा रोका गया। ब्राह्मण बहुत खुश हुआ| इतना ही नहीं, उन्होंने मुझे सम्मेलन में बोलने की इजाजत नहीं दी| पेरियार ने बाद में कांग्रेस के बारे में लिखा, "केवल ब्राह्मण और अमीर लोग ही कांग्रेस पार्टी का फायदा उठा रहे हैं| इससे आम आदमी, गरीब आदमी और मजदूर वर्ग का भला नहीं होगा| मैं ये बात काफी समय से कह रहा हूं| "कांग्रेस अध्यक्ष या सचिव के रूप में, तमिलनाडु में ब्राह्मणवाद और ब्राह्मण वर्चस्व को तोड़ने के हर प्रयास को कांग्रेस पार्टी पर हावी होने वाले द्विज पुरुषों द्वारा विफल कर दिया गया था। इतना ही नहीं, गांधी ने सार्वजनिक रूप से जाति व्यवस्था की श्रेष्ठता और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता की घोषणा की। तमिलनाडु. भीखू पारेख ने अपनी पुस्तक उपनिवेशवाद, परंपरा और सुधार: गांधी के राजनीतिक प्रवचन का एक विश्लेषण में गांधी को यह कहते हुए उद्धृत किया है, "वर्णाश्रम धर्म एक अभिशाप नहीं है; बल्कि यह उन नींवों में से एक है जिस पर हिंदू धर्म खड़ा है, और यह (वर्णाश्रम धर्म) पृथ्वी पर मनुष्य की नींव है।" बताते हैं कि जन्म का उद्देश्य क्या है? गांधी आगे कहते हैं, "ब्राह्मण हिंदू धर्म और मानवता के सबसे सुंदर

फूल हैं।" वह आगे अपनी बात पर जोर देते हैं, "मेरे पास बिना किसी आवश्यकता के वे (ब्राह्मण) हैं कुछ भी कर। वे अपनी सुरक्षा अच्छे से कर सकते हैं. वे पहले भी कई तूफानों का सामना कर चुके हैं। मैं गैर-ब्राह्मणों से बस इतना कहना चाहता हूं कि वे (ब्राह्मण) उन्हें अपनी सुगंध और चमक से रौंदने की कोशिश कर रहे हैं। "

पेरियार ने वामपंथियों के साथ भी मिलकर काम किया लेकिन उन्होंने देखा कि वामपंथियों द्वारा जाति व्यवस्था का इस्तेमाल किया जा रहा था, पितृसत्ता और धर्म के बीच संबंधों को नजरअंदाज किया जा रहा था। वर्ग की वामपंथियों की यंत्रवत यूरोपीय धारणा, इतिहास और जाति, पितृसत्ता, धर्म की एक रेखीय आर्थिक व्याख्या, पेरियार को राष्ट्रवाद और वर्ग के बीच संबंधों को समझने में विफलता से अलग होना पड़ा। हैं| उन्हें जातिवाद की बुराइयों की कोई चिंता नहीं है और प्रतिक्रियावादी गांधी के दुष्प्रचार के दुष्परिणाम। उन्हें उस राजा की चिंता नहीं है जो केवल यह चिंता करता है कि ब्राह्मण कैसे सुखी रहेंगे। उन्हें कांग्रेस पार्टी की चिंता नहीं है, जो वर्णाश्रम धर्म का समर्थन करती है।" बाद में पेरियार ने तमिलनाडु में गैर-ब्राह्मण धर्म के नेता जस्टिस पार्टी के साथ भी मिलकर काम किया। जस्टिस पार्टी की स्थापना 1916 में (आधुनिक चेन्नई) में हुई थी। तमिलनाडु में द्रविड़ आंदोलन की औपचारिक शुरुआत 1916 में हुई, जब जस्टिस पार्टी ने गैर-ब्राह्मण घोषणापत्र प्रकाशित किया। इस घोषणापत्र के मूल में ब्राह्मणवाद बनाम गैर-ब्राह्मण संघर्ष था.. मद्रास प्रेसीडेंसी में ब्राह्मणों का प्रभुत्व कितना था?, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 1912 में ब्राह्मण आबादी केवल 3.2 प्रतिशत थी, जबकि 55 प्रतिशत जिला अधिकारी और 72.2 प्रतिशत जिला न्यायाधीश ब्राह्मण थे। मंदिरों और मठों पर ब्राह्मणों का कब्ज़ा था, लेकिन ज़मीन पर भी उन्हीं लोगों का स्वामित्व था। इस प्रकार तमिल समाज के जीवन के सभी क्षेत्रों पर ब्राह्मणों का प्रभुत्व हो गया.. इस प्रभुत्व को तोड़ने के लिए ब्राह्मण विरोधी आंदोलन शुरू हुआ। 1915-1916 इस वर्चस्व को तोड़ने के लिए ब्राह्मण विरोधी आंदोलन शुरू हुआ। इस वर्चस्व को तोड़ने के लिए ब्राह्मण विरोधी आंदोलन शुरू हुआ इस वर्चस्व को तोड़ने के लिए ब्राह्मण विरोधी आंदोलन शुरू हुआ। सांसद एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष। इस वर्चस्व को तोड़ने के लिए ब्राह्मण विरोधी आंदोलन चलाया गया। न्याय आंदोलन की स्थापना त्यागराज चेट्टी ने की थी। इन मध्य जातियों में प्रमुख थे तमिल वल्लाल, मुदलियाल और चेट्टियार। इसमें तेलुगु रेड्डी, कम्म, बलीचा नायडू और मलयाली नायर भी शामिल थे। 1920 के मोंटेग-चेम्सफोर्ड सुधारों के तहत, मद्रास प्रेसीडेंसी में एक द्विदलीय प्रणाली बनाई गई थी जो राष्ट्रपति चुनावों के लिए प्रदान की गई थी। जस्टिस पार्टी ने इन चुनावों में भाग लिया और गैर- ब्राह्मणों के नेतृत्व वाली और डोमिनेंट जस्टिस पार्टी सत्ता में आई. इस पार्टी के नेतृत्व में, तमिलनाडु ने 1921 में पहली बार सरकारी नौकरियों में गैर-ब्राह्मणों के लिए आरक्षण लागू किया। लेकिन पेरियार ने देखा कि जस्टिस पार्टी तमिलनाडु में ब्राह्मणों के राजनीतिक आधिपत्य को तोड़ना चाहती थी और गैर-ब्राह्मणों के राजनीतिक आधिपत्य को बनाए रखना चाहती थी, लेकिन आधिपत्य और अन्याय के अन्य रूपों के खिलाफ चुप रही, जब वह एक क्रांतिकारी बदलाव के लिए लड़ रही थी। सभी प्रकार के आधिपत्य और अन्याय को समाप्त कर देंगे और एक ऐसी दुनिया का निर्माण करेंगे जहां कोई अन्याय और शोषण नहीं होगा। (स्वाभिमान आंदोलन) नाम दिया गया. पेरियार ने 20 अक्टूबर 1945 को अपनी पत्रिका 'कुडी अरसु' में लिखा था कि "देश में कई आंदोलन चल रहे हैं...कांग्रेस पार्टी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ रही है। जस्टिस पार्टी ब्राह्मणों के राजनीतिक वर्चस्व के खिलाफ लड़ रही है. आदि द्रविड़ पार्टी ऊंची जाति के हिंदू वर्चस्व के खिलाफ लड़ रही है और लेबर पार्टी पूंजीवादी वर्चस्व के खिलाफ लड़ रही है.. इस प्रकार हर पार्टी का लक्ष्य एक प्रकार के वर्चस्व को नष्ट करना है.. लेकिन, अगर कोई पार्टी सभी प्रकार के वर्चस्व के खिलाफ एक साथ लड़ती है, तो यह एक स्व -सम्मान-आंदोलन.. " पेरियार ने

भारत में स्वराज आंदोलन के उद्देश्य पर सवाल उठाया। हम स्वराज्य की बात जोर-शोर से कर रहे हैं| आपके लिए स्वराज तमिल हैं या उत्तर भारतीय? क्या यह आपके लिए है या पूंजीपतियों के लिए? स्वराज आपके लिए है या कालाबाजारी? क्या यह मजदूरों के लिए है या उनका खून चूसने वालों के लिए? अपने स्वाभिमान आंदोलन के उद्देश्यों को समझाते हुए पेरियार लिखते हैं, "आत्मसम्मान आंदोलन का उद्देश्य उन ताकतों का पता लगाना है, जो हमारी प्रगति में बाधा बन रही हैं। वह समाजवाद के खिलाफ काम करने वाली ताकतों का मुकाबला करेंगे।' यह सभी धार्मिक प्रतिक्रियावादी ताकतों का विरोध करेगा। " पेरियार का भविष्य की दुनिया का सपना मार्क्स-एंगेल्स के साम्यवाद के सपने से मेल खाता है। अपने निबंध 'फ्यूचर वर्ल्ड' में आदर्श समाज की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए उन्होंने तमिल पुस्तक इनि वरुम उल्लागम में लिखा: नई दुनिया में किसी को चोरी या चोरी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी. गंगा जैसी पवित्र नदियों के तट पर रहने वाले लोग इसका जल चोरी नहीं करेंगे। वे उतना ही पानी लेंगे जितनी उन्हें जरूरत है। वे भविष्य में उपयोग के लिए दूसरों से पानी नहीं छिपाएंगे। यदि किसी के पास आवश्यकताएं प्रचुर मात्रा में हों तो वह चोरी करने के बारे में सोचेगा भी नहीं। इसी प्रकार झूठ बोलने, धोखा देने या किसी को धोखा देने की भी जरूरत नहीं है। क्योंकि उसे इससे कुछ भी नहीं मिल सकता. मादक पेय किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएगा। कोई किसी की हत्या के बारे में नहीं सोचेगा. समय गुजारने के नाम पर जुआ, सट्टा जैसी लतें खत्म हो जाएंगी। उनकी वजह से किसी को भी आर्थिक बर्बादी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इसी किताब में वह आगे लिखते हैं, "पैसे के लिए या जबरदस्ती किसी को भी वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए| एक स्वाभिमानी समाज में कोई भी दूसरे पर शासन नहीं करेगा। कोई भी पक्षपात की उम्मीद नहीं करेगा। ऐसे समाज में, जीवन और कार्य संबंधों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण उदार और मानवीय होगा। वे अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखेंगे। सभी में आत्म-सम्मान की भावना होगी। पुरुष और महिला दोनों एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करेंगे और किसी के प्यार को मजबूर नहीं किया जाएगा। नहीं कोई इसे (बलपूर्वक) प्राप्त करने का प्रयास करेगा। महिला दासता के लिए कोई जगह नहीं होगी। पुरुष प्रभुत्व समाप्त हो जाएगा। उनमें से कोई भी दूसरे पर शक्ति का प्रयोग नहीं करेगा। नहीं। आने वाले समुदाय में कहीं भी वेश्यावृत्ति नहीं होगी।" पेरियार जिस भावी समाज का सपना देखते हैं, भारत में उसकी स्थापना की पहली शर्त अम्बेडकर की तरह वे जाति उन्मूलन को मानते थे| उनका मानना था कि हिंदू धर्म की स्थापना जाति की रक्षा के लिए हुई थी| जाति की रक्षा के लिए जन्मे देवता नानी और हैं मनुस्मृति, रामायण, गीता और पुराणों की रचना की गई है। उन्होंने लिखा, "इस जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज को क्रूर और बर्बर समाज में बदल दिया है।" 1959 में उन्होंने लिखा, "हमारे देश में जाति के विनाश का अर्थ है- ईश्वर, धर्म, शास्त्र और ब्राह्मण (ब्राह्मणवाद) का विनाश। जाति का अंत तभी हो सकता है, जब ये सब ख़त्म हो जायेंगे। अगर इनमें से एक भी बचे , इससे जाति का विनाश नहीं हो सकता।" भारतीय समाज और व्यक्तियों का पूर्ण आधुनिकीकरण बुद्धिजीवियों के विचारों पर आधारित है, उनमें ई.वी. भी शामिल हैं। रामासामी पेरियार अग्रणी हैं। पेरियार ने उन सभी मुद्दों की पहचान की और उन पर प्रकाश डाला जिनका उन्मूलन भारतीय समाज के आधुनिकीकरण के लिए एक अनिवार्य शर्त है। ई.वी. रामासामी नायकर 'पेरियार' भारत की प्रगतिशील श्रमण-बहुजन-परंपरा के लेखक हैं, जिन्होंने आर्य श्रेष्ठता और उत्तर भारत के द्विजों के मर्दवादी अहंकार पर जोर दिया। प्रभुत्व, अन्याय, किसी भी प्रकार की असमानता और दासता को उन्होंने स्वीकार नहीं किया.. उनकी आवेगपूर्ण अभिव्यक्ति पाठकों को झकझोर देती है। 1970 मुझे उनके तर्क, दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति की शैली के लिए यूनेस्को द्वारा "दक्षिण एशिया का सुकरात" कहा गया था। पेरियार 1920 से 1925 तक कांग्रेस पार्टी में रहे। वह औपचारिक

रूप से 1920 में कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए और 1920 और 1924 में तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेंसी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष और 1921 और 1922 में इसके सचिव रहे। इस अवधि के दौरान उन्होंने गांधी के एक मजबूत मित्र के रूप में काम किया लेकिन कांग्रेस और गांधी के साथ काम करते समय उन्हें एहसास हुआ कि यह पार्टी और गांधी उत्तर भारतीय आर्य-द्विज लोगों के वर्चस्व को बनाए रखने के लिए एक उपकरण थे। उन्होंने अपने काम के अनुभवों के बारे में लिखा कांग्रेस पार्टी में जब मैं तमिलनाडु कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष था, तब मैंने 1925 के सम्मेलन में एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। उस प्रस्ताव में मैंने जातिविहीन समाज बनाने का प्रस्ताव रखा| मेरे मित्र चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (राजाजी) ने इसे अस्वीकार कर दिया। मैंने अनुरोध किया था कि कांग्रेस के विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों में जाति प्रतिनिधित्व (वंचित और अल्पसंख्यक वर्गों के लिए आरक्षण) का पालन किया जाना चाहिए। लेकिन इस प्रस्ताव पर विषय समिति में भी चर्चा हुई| एन.एस. (एक प्रतिष्ठित तमिल विद्वान कल्याणसुंदरनार द्वारा अस्वीकृत)। फिर मुझसे अपने प्रस्ताव के समर्थन में 30 प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर लेने को कहा गया. श्रीमती। रामनाथन को 50 प्रतिनिधियों से हस्ताक्षर मिले। फिर सभी श्री सी. राजगोपालाचारी, श्रीनिवास अयंगर, सत्यमूर्ति और अन्य ने अपना विरोध दर्ज कराया। उन्हें डर था कि यदि मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया तो कांग्रेस समाप्त हो जायेगी। बाद में यह प्रस्ताव थिरु वी. एन.एस. और डॉ. पी. वर्दराजुलु द्वारा रोका गया। ब्राह्मण बहुत खुश हुआ. इतना ही नहीं, उन्होंने मुझे सम्मेलन में बोलने की इजाजत नहीं दी." पेरियार ने बाद में कांग्रेस के बारे में लिखा, "केवल ब्राह्मण और अमीर लोग ही कांग्रेस पार्टी का फायदा उठा रहे हैं. इससे आम आदमी, गरीब आदमी और मजदूर वर्ग का भला नहीं होगा. मैं ये बात काफी समय से कह रहा हूं. ''कांग्रेस अध्यक्ष या सचिव के रूप में, तमिलनाडु में ब्राह्मणवाद और ब्राह्मण वर्चस्व को तोड़ने के हर प्रयास को कांग्रेस पार्टी पर हावी होने वाले द्विज पुरुषों द्वारा विफल कर दिया गया था। इतना ही नहीं, गांधी ने सार्वजनिक रूप से जाति व्यवस्था की श्रेष्ठता और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता की घोषणा की। तमिलनाडु. भीखू पारेख ने अपनी पुस्तक उपनिवेशवाद, परंपरा और सुधार: गांधी के राजनीतिक प्रवचन का एक विश्लेषण में गांधी को यह कहते हुए उद्धृत किया है, "वर्णाश्रम धर्म एक अभिशाप नहीं है; बल्कि यह उन नींवों में से एक है जिस पर हिंदू धर्म खड़ा है, और यह (वर्णाश्रम धर्म) पृथ्वी पर मनुष्य की नींव है।" बताते हैं कि जन्म का उद्देश्य क्या है? गांधी आगे कहते हैं, "ब्राह्मण हिंदू धर्म और मानवता के सबसे सुंदर फूल हैं।" वह आगे अपनी बात पर जोर देते हैं।, "मेरे पास बिना किसी आवश्यकता के वे (ब्राह्मण) हैं कुछ भी कर। वे अपनी सुरक्षा अच्छे से कर सकते हैं. वे पहले भी कई तूफानों का सामना कर चुके हैं। मैं गैर-ब्राह्मणों से बस इतना कहना चाहता हूं कि वे (ब्राह्मण) उन्हें अपनी सुगंध और चमक से रौंदने की कोशिश कर रहे हैं। "

निष्कर्ष :

इस विषय पर उनके विचार इतने क्रांतिकारी थे कि द्रविड़ कड़गम के उनके कट्टर समर्थक भी उन्हें पसंद नहीं करते थे और पार्टी ने उन्हें बढ़ावा नहीं दिया या उनके जैसा काम नहीं किया। गीता ने हाल ही में भाग लेते हुए कहा।- पेरियार के क्रांतिकारी विचारों को अलग रखा जाना चाहिए, उन्हें ऐसा करना चाहिए केवल आरक्षण दिया जाए। खुली नास्तिकता और कटु ब्राह्मणों को जाति-विरोधी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, ऊपरी और निचले, लिंग और लिंग आदि जैसे मुद्दों पर उनके विचार गुमनामी में चले गए हैं जैसे कि एक कोठरी में बंद कर दिया गया हो। पेरियार श्रम और पूंजी के बीच संघर्ष में श्रमिक वर्ग के साथ खड़े हैं। वह स्पष्ट रूप से लिखते हैं कि "यह श्रम है, जो दुनिया में सब कुछ बनाता है। लेकिन, यह केवल श्रम, कठिनाइयों और पीड़ाओं से गुजरने का सवाल है।" पेरियार ने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें शोषण और अन्याय का नामोनिशान नहीं होगा.. उस दुनिया का खाका

खींचते हुए वे लिखते हैं, "एक समय आएगा जब धन को सिक्कों में नहीं मापा जाएगा. सरकार की कोई जरूरत नहीं होगी." किसी भी आदमी को जीवित रहने के लिए काम नहीं करना पड़ेगा। कुछ नहीं होगा।" नहीं, जिसे नीच समझा जाता है या जिसके कारण व्यक्ति को हेय दृष्टि से देखा जाता है। पेरियार का भारत दर्शन बर्बर मध्ययुगीन मूल्यों और विचारों में जी रहा है, जिस पर चिंतन और मनन की सख्त जरूरत है।

संदर्भ सूची :

- व्ही. अनिमुथु, एड. ई.व्ही. रामास्वामी सिथनायकल (पेरियारचे विचार), 3 खंडांमध्ये, सिंथनयालर पाथिप्पगम, त्रिचनपोली, 1974, (2009 मध्ये अनेक खंडांमध्ये मर्यादित आवृत्ती म्हणून पुनर्मुद्रित).
- व्ही. गीता आणि एस.व्ही. राजादुराई, ऍड. रिव्हॉल्ट: ए रॅडिकल वीकली फ्रॉम कॉलोनियल मद्रास, पेरियार द्रविडर कळघम पब्लिकेशन, चेन्नई, 2008 ('पेरियार द्रविडर कळघम' नंतर 'द्रविदार विदुथलाई कळघम' असे बदलले आहे.)
- व्ही.एम. सुबगनराजन, ऍड. नमक्कू एन इंधा, एझी निलाई? जाति मनादुगल्लीम जाति ओझिप्पू मनादुगल्लीलम पेरियार (आपण अधोगती का आहोत? पेरियार यांची जात आणि जात निर्मूलन सभेतील भाषणे, कायल काविन, चेन्नई 2018).

Research Hub International Journal